# 05/08/18 की मुरली से प्रश्नोत्तरी

## ( श्रेष्ठ पद की प्राप्ति का आधार-मुरली )

**(Rev 07-12-83)**

**प्रश्न - आज मुरलीधर बाप अपने मुरली के स्नेही बच्चों में क्या देख रहे हैं?**

उत्तर - देख रहे हैं कि कितना मुरलीधर बाप से स्नेह है और कितना मुरली से स्नेह है।

**प्रश्न - मुरली के पीछे क्या हो जाते हैं?**

उत्तर - मस्त।

**प्रश्न - अपनी देह की सुध-बुध भूल देही बन किससे सुनते हैं?**

उत्तर - विदेही बाप से।

**प्रश्न - जरा भी देहधारी स्मृति की क्या नहीं?**

उत्तर - सुध-बुध नहीं। इस विधि से मस्त हो कैसे खुशी में नाचते हैं।

**प्रश्न - स्वयं को भाग्य-विधाता बाप के सम्मुख क्या समझ रुहानी नशे में रहते?**

उत्तर - पदमापदम भाग्यवान।

**प्रश्न - जैसे-जैसे यह रुहानी नशा, मुरलीधर की मुरली का नशा चढ़ जाता है तो अपने को क्या अनुभव करते हैं?**

उत्तर - इस धरनी और देह से ऊपर उड़ता हुआ।

**प्रश्न - मुरली की तान से अर्थात् मुरली के साज़ और राज़ से किसके साथ और कैसे चलते?**

उत्तर - मुरलीधर बाप के साथ अनेक अनुभवों में चलते जाते।

**प्रश्न - कभी ....., कभी ..... में चले जाते, कभी अपने ..... में चले जाते।**

उत्तर - मूलवतन, सूक्ष्मवतन, राज्य।

**प्रश्न - इस दु:खी अशान्त संसार की आत्माओं को सुख-शान्ति की किरणें कैसे देते?**

उत्तर - लाइट हाउस, माइट हाउस बन कर।

**प्रश्न - बच्चे रोज़ क्या करते हैं?**

उत्तर - तीनों लोकों की सैर मुरलीधर बाप के साथ करते।

**प्रश्न - अतीन्द्रिय सुख के झूले में कैसे झूलते हैं?**

उत्तर - मुरली सुन-सुनकर।

**प्रश्न - मुरलीधर की मुरली के साज़ से क्या मिलता जिससे तन तन्दरुस्त, मन मनदुरुस्त हो जाता है?**

उत्तर - अविनाशी दुआ की दवा मिलती।

**प्रश्न - मस्ती में मस्त हो क्या-क्या बन जाते हैं?**

उत्तर - बेपरवाह बादशाह बन जाते हैं। बेगमपुर के बादशाह बन जाते हैं। स्वराज्य-अधिकारी बन जाते हैं।

**प्रश्न - एक ही मुरली द्वारा क्या बन जाते?**

उत्तर - कोई राजा, कोई प्रजा बन जाता है क्योंकि विधि द्वारा सिद्धि होती है,

**प्रश्न - जितना जो विधिपूर्वक सुनते उतना ही क्या बनते हैं?**

उत्तर - सिद्धि स्वरुप।

**प्रश्न - एक हैं विधिपूर्वक सुनने वाले अर्थात् क्या?**

उत्तर - समाने वाले।

**प्रश्न - दूसरे हैं नियम पूर्वक सुनने वाले अर्थात् क्या?**

उत्तर - कुछ समाने, कुछ वर्णन करने वाले।

**प्रश्न - तीसरों की तो .....।**

उत्तर - बात ही नहीं।

**प्रश्न - यथार्थ विधिपूर्वक सुनने और समाने वाले क्या बन जाते हैं?**

उत्तर - स्वरुप बन जाते हैं।

**प्रश्न - किन्हों का हर कर्म मुरली का स्वरुप है?**

उत्तर - यथार्थ विधिपूर्वक सुनने और समाने वालों का।

**प्रश्न - अपने आप से क्या पूछो?**

उत्तर - किस नम्बर में हैं? पहले वा दूसरे में?

**प्रश्न - मुरलीधर बाप का रिगार्ड अर्थात् क्या?**

उत्तर - मुरली के एक-एक बोल का रिगार्ड।

**प्रश्न - एक-एक वरशन (महावाक्य) क्या है?**

उत्तर - 2500 वर्षो की कमाई का आधार है। पदमों की कमाई का आधार है।

**प्रश्न - एक वरदान मिस हुआ तो क्या हुआ?**

उत्तर - पदमों की कमाई मिस हुई।

**प्रश्न - एक वरदान क्या बना देता है?**

उत्तर - खजानों की खान।

**प्रश्न - मुरली के हर बोल को विधिपूर्वक सुनने और उससे प्राप्त हुई सिद्धि के हिसाब-किताब की गति को जानने वाले किसको प्राप्त होते हैं?**

उत्तर - श्रेष्ठ गति को।

**प्रश्न - जैसे कर्मो की गति गहन है वैसे विधिपूर्वक मुरली सुनने समाने की गति भी कैसी है?**

उत्तर - अति श्रेष्ठ है।

**प्रश्न - मुरली ही ब्राह्मण जीवन का क्या है?**

उत्तर - साँस (श्वाँस), श्वाँस नहीं तो जीवन नहीं - ऐसी अनुभवी आत्माएं हो ना।

**प्रश्न - अमृतवेले मुरली विधिपूर्वक सुनने से क्या होता है?**

उत्तर - सारा दिन हर कर्म में सिद्धि स्वरुप स्वत: और सहज बनाती है।

**प्रश्न - नये-नये आये हैं  तो उन्हें क्या सुना रहे हैं?**

उत्तर - लास्ट सो फास्ट जाने का तरीका सुना रहे हैं।

**प्रश्न - समय की दूरी को किस विधि से गैलप कर सकते हो?**

उत्तर - मुरली विधिपूर्वक सुनने से।

**प्रश्न - साधन तो बापदादा सुनाते हैं जिससे किसी भी बच्चे का क्या रह न जाये?**

उत्तर - उल्हना, पीछे क्यों आये वा क्यों बुलाया... लेकिन आगे बढ़ सकते हो।

**प्रश्न - आगे बढ़ो श्रेष्ठ विधि से और क्या लो?**

उत्तर - श्रेष्ठ नम्बर।

**प्रश्न - उल्हना तो नहीं रहेगा ना। उसके लिए कौन सा रास्ता बता रहे हैं?**

उत्तर - रिफाइन रास्ता।

**प्रश्न - नये कब आये हैं?**

उत्तर - बने बनाये पर आये हो।

**प्रश्न - कौन से समय पर आये हो?**

उत्तर - निकले हुए मक्खन को खाने के समय पर आये हो।

**प्रश्न - एक ..... से तो पहले ही मुक्त हो।**

उत्तर - मेहनत।

**प्रश्न -अभी सिर्फ क्या करो?**

उत्तर - खाओ और हज़म करो।

*ऐसे सर्व विधि सम्पन्न, सर्व सिद्धि को प्राप्त करने वाले, मुरलीधर की मुरली पर देह की सुध-बुध भूलने वाले,खुशियों के झूले में झूलने वाले, रुहानी नशे में मस्त योगी बन रहने वाले, मुरलीधर और मुरली का रिगार्ड रखने वाले, ऐसे मास्टर मुरलीधर, मुरली वा मुरलीधर स्वरुप बच्चों को बापदादा का साकारी और आकारी दोनों बच्चों को स्नेह सम्पन्न याद-प्यार और नमस्ते।*

## पार्टियों के साथ अव्यक्त बापदादा की मुलाकात

**प्रश्न - सदा एक बाप की याद में रहने वाली, एकरस स्थिति में स्थित रहने वाली कौन हो?**

उत्तर - श्रेष्ठ आत्मायें हो ना!

**प्रश्न - सदैव एकरस आत्मा हो या और .....अपनी तरफ खींच लेता है?**

उत्तर - कोई भी रस।

**प्रश्न - .....अपनी तरफ खींचता तो नहीं है ना?**

उत्तर - कोई अन्य रस।

**प्रश्न - आप सबको तो है ही.....।..... में सब समाया हुआ है। जब है ही ....., और कोई है नहीं। तो जायेंगे कहाँ। कोई काका, मामा, चाचा तो नहीं है ना।**

उत्तर - एक, एक, एक।

**प्रश्न - आप सबने क्या वायदा किया?**

उत्तर - यही वायदा किया है ना कि सब कुछ आप ही हो।

**प्रश्न - ..... ने पक्का वायदा किया है?**

उत्तर - कुमारियों ने।

**प्रश्न - पक्का वायदा किया और.....**

**..... में पड़ी।**

उत्तर - वरमाला गले में पड़ी।

**प्रश्न - वायदा किया और क्या मिला?**

उत्तर - वर भी मिला और घर भी मिला।

**प्रश्न - कुमारियों के लिए मां-बाप को क्या सोचना पड़ता है?**

उत्तर - वर और घर अच्छा मिले।

**प्रश्न - तुम्हें तो ऐसा वर मिल गया कैसा?**

उत्तर - जिसकी महिमा जग करता है।

**प्रश्न - घर भी कैसा मिला है?**

उत्तर - जहाँ अप्राप्त कोई वस्तु नहीं।

**प्रश् कुमारियों को क्या कहा जाता है?**

उत्तर - समझदार।

**प्रश्न - कुमारियां तो हैं ही क्या?**

उत्तर - समझदार।

**प्रश्न - बापदादा को कुमारियों को देखकर खुशी क्यों होती है?**

उत्तर - क्योंकि बच गयीं। कोई गिरने से बच जाए तो खुशी होगी ना।

**प्रश्न - माताएं जो गिरी हुई थी उनको तो क्या कहेंगे?**

उत्तर - कि गिरे हुए को बचा लिया लेकिन कुमारियों के लिए कहेंगे गिरने से बच गई।

**प्रश्न - मातायें भी लकी हैं क्यों?**

उत्तर - क्योंकि फिर भी गऊपाल की गऊएं हैं।

**प्रश्न - जो मायाजीत होंगे उनको कौन सा नशा जरूर होगा?**

उत्तर - विश्व कल्याणकारी का।

**प्रश्न - बेहद की सेवा अर्थात् क्या?**

उत्तर - विश्व की सेवा।

**प्रश्न - कौन सी स्मृति सदा रहे?**

उत्तर - हम बेहद के मालिक के बालक हैं।

**प्रश्न - कौन सी खुशी में सदा आगे बढ़ते रहो?**

उत्तर - क्या बन गये, क्या मिल गया, इसी खुशी में।

**प्रश्न - आगे बढ़ने वालों को देख बापदादा को क्या होता है?**

उत्तर - हर्षित होते हैं।

**प्रश्न - सदा कौन सी मस्ती में मस्त रहो?**

उत्तर - बाप के याद की मस्ती में।

**प्रश्न - ईश्वरीय मस्ती क्या बना देती है?**

उत्तर - एकदम फर्श से अर्श निवासी।

**प्रश्न - ऊंचे ते ऊंचे बाप के बच्चे बने, तो कहां रहेंगे।**

उत्तर - सदा अर्श पर रहते हो या फर्श पर नहीं।

**प्रश्न - कभी भी बुद्धि रुपी पांव कहाँ पर न हो?**

उत्तर  फर्श पर नहीं, ऊपर। इसको कहा जाता है ऊंचे ते ऊंचे बाप के ऊंचे बच्चे।

**प्रश्न - सदा अचल अडोल सर्व खजानों से कैसे रहो?**

उत्तर - सम्पन्न।

**प्रश्न - थोड़ा भी माया में डगमग हुए तो क्या होगा?**

उत्तर - सर्व खजानों का अनुभव नहीं होगा।

**प्रश्न - बाप द्वारा मिले खजानों को सदा कायम रखने का साधन क्या है?**

उत्तर - सदा अचल अडोल रहो।

**प्रश्न - अचल रहने से कौन सी अनुभूति होती रहेगी?**

उत्तर - सदा ही खुशी की अनुभूति होगी।

**प्रश्न - सभी ब्राह्मणों को क्या प्राप्त हो गया है?**

उत्तर - स्वराज्य।

**प्रश्न - पहले क्या गाते थे मैं गुलाम, मैं गुलाम.. अब क्या बन गये?**

उत्तर - स्वराज्यधारी।

**प्रश्न - गुलाम से क्या बन गये?**

उत्तर  राजा।

**प्रश्न - बाप को याद करना और क्या से क्या बनना?**

उत्तर - गुलाम से राजा बनना।

**प्रश्न - विश्व का राज्य कैसे मिलता है?**

उत्तर - स्वराज्य से।

**प्रश्न - अभी कौन से नशे में सदा रहो?**

उत्तर - हम स्वराज्य अधिकारी हैं, तो यह कर्मेन्द्रियां स्वत: ही श्रेष्ठ रास्ते पर चलेंगी।

**प्रश्न - सदा कौन सी खुशी में रहो?**

उत्तर - कि पाना था जो पा लिया.. क्या से क्या बन गये। कहाँ पड़े थे और कहाँ पहुँच गये।

## अव्यक्त बापदादा के महावाक्यों से चुने हुए प्रश्न-उत्तर

**प्रश्न 1 - पुरुषार्थ का अन्तिम लक्ष्य कौनसा है? जिसका विशेष अटेन्शन रखना है?**

उत्तर - अव्यक्त-फरिश्ता होकर रहना - यही पुरूषार्थ का अन्तिम लक्ष्य है। यह लक्ष्य सामने रखने से अनुभव करेंगे कि लाइट के कार्ब में मेरा यह लाइट का शरीर है। जैसे व्यक्त, पाँच तत्वों के कार्ब में है, ऐसे अव्यक्त, लाइट के कार्ब में है। लाइट का रुप तो है, लेकिन आसपास चारों ओर लाइट ही लाइट है। मैं आत्मा ज्योति रूप हूँ-यह तो लक्ष्य है ही। लेकिन मैं आकार में भी कार्ब में हूँ।

**प्रश्न 2 - हर कार्य करते हुए किस स्मृति को विशेष बढ़ाओ तो निराकारी स्टेज सहज बन जायेगी?**

उत्तर - हर कार्य करते हुए स्मृति रहे कि मैं फरिश्ता निमित्त इस कार्य अर्थ पृथ्वी पर पाँव रख रहा हूँ, लेकिन मैं हूँ अव्यक्त देश का वासी, मैं इस कार्य-अर्थ पृथ्वी पर वतन से आया हूँ, कारोबार पूरी हुई, फिर वापस अपने वतन में। इस स्मृति से सहज ही निराकारी स्टेज बन जायेगी।

**प्रश्न 3 - साकार स्वरूप के नशे की पाइंटस के साथ-साथ किस अनुभव में रहने से ही साक्षात्कार मूर्त बन सकेंगे?**

उत्तर - जैसे यह स्मृति में रहता है कि मैं श्रेष्ठ आत्मा हूँ, मैं ब्राह्मण हूँ, मैं शक्ति हूँ। इस स्मृति से नशे और खुशी का अनुभव होता है। लेकिन जब अव्यक्त स्वरुप में, लाइट के कार्ब में स्वयं को अनुभव करेंगे तब साक्षात्कार मूर्त बनेंगे क्योंकि साक्षात्कार लाइट के बिना नहीं होता है। तो आपके लाइट रूप के प्रभाव से ही उनको दैवी स्वरुप का साक्षात्कार होगा।

**प्रश्न 4 - वर्तमान समय के प्रमाण आपका कौन सा स्वरूप चाहिए? अभी कौन सा पार्ट समाप्त हुआ?**

उत्तर - वर्तमान समय के प्रमाण आप सबका ज्वालामुखी स्वरूप चाहिए। साधारण स्वरूप, साधारण बोल नज़र न आयें, अनुभव करें कि यह देवी मेरे प्रति क्या आकाशवाणी करती है। अब आपका गोपी-पन का पार्ट समाप्त हुआ। जब आप शक्ति रूप में रहेंगे तो आप द्वारा सबको अनुभव होगा कि यह कोई अवतार हैं - यह कोई साधारण शरीरधारी नहीं हैं। अवतार प्रगट हुए हैं। महावाक्य बोले और प्राय:लोप। अभी की स्टेज व पुरुषार्थ का लक्ष्य यह होना चाहिए।

**प्रश्न 5 - निमित्त बने हुए मुख्य सर्विसएबुल, राज्यभागय की गद्दी लेने वाले अनन्य रत्नों की सेवा क्या है?**

उत्तर - वे लाइट हाउस मिसल घूमते और चारों ओर लाइट देते रहेंगे। एक अनेकों को लाइट देंगे। स्थूल कारोबार से उपराम होते जायेंगे। इशारे में सुना, डायरेक्शन दिया और फिर अव्यक्त वतन में। अभी जिम्मेवारियाँ और सर्विस का विस्तार तो चारों ओर और बढ़ेगा। भिन्न-भिन्न प्रकार की जो सर्विस हो रही है, वह बढ़ेगी।

**प्रश्न 6 - चक्रवर्ती महाराजा कौन बनते हैं, उनकी निशानियां सुनाओ।**

उत्तर - जो अभी चक्रधारी हैं वही चक्रवर्ती महाराजा बनेंगे। जिसमें लाइट का भी चक्र हो और सेवा में प्रकाश फैलाने वाला चक्र भी हो, तब ही कहेंगे - चक्रधारी। ऐसा चक्रधारी ही चक्रवर्ती बन सकता है। आपके लाइट का रुप और लाइट का क्राउन ऐसा कॉमन हो जाये जो चलते - फिरते सबको दिखाई दे कि यह लाइट के ताजधारी हैं।

**प्रश्न 7 - किस अभ्यास से शरीर के हिसाब-किताब हल्के हो जायेंगे, शरीर को नींद की खुराक मिल जायेगी?**

उत्तर- अव्यक्त लाइट रूप में स्थित होने का, शरीर से परे होने का अभ्यास हो तो 2-4 मिनट की अशरीरी स्थिति से शरीर को नींद की खुराक मिल जायेगी। शरीर तो पुराने ही रहेंगे। हिसाब-किताब भी पुराना होगा ही। लेकिन लाइट-स्वरुप के स्मृति को मजबूत करने से हिसाब-किताब चुक्त करने में लाइट रुप हो जायेंगे, इसके लिए अमृतवेले विशेष यह अभ्यास करो कि मैं अशरीरी और परमधाम का निवासी हूँ, अथवा अव्यक्त रुप में अवतरित हुआ हूँ।

**प्रश्न 8 - मायाजीत बनने का सहज साधन क्या है?**

उत्तर - मायाजीत बनने के लिए अपनी बुराईयों पर क्रोध करो। जब क्रोध आये तो आपस में नहीं करना, बुराईयों से क्रोध करो, अपनी कमज़ोरियों पर क्रोध करो तो मायाजीत सहज बन जायेंगे।

**प्रश्न 9 - गाँव वालों को देख बापदादा विशेष खुश होते हैं, क्यों?**

उत्तर:- क्योंकि गांव वाले बहुत भोले होते हैं। बाप को भी भोलानाथ कहते हैं। जैसे भोलानाथ बाप वैसे भोले गांव वाले तो सदा यह खुशी रहे कि हम विशेष भोलानाथ के प्यारे हैं।